उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार) लखनऊ, उत्तर प्रदेश

कार्यवाही

राष्ट्रीय सम्मेलन में सहभागिता,

कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, जी.के.वी.के., बेंगलुरु

"जलवायु-संवेदी फसल विज्ञान में प्रगति: आनुवंशिकी, जीनोमिक्स एवं प्रजनन पर राष्ट्रीय सम्मेलन"

सम्मेलन की तिथि: 31 अक्टूबर से 2 नवम्बर, 2025

राजकीय उद्यान के निकट, करिअप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ–226005

सम्मेलन का शीर्षक: जलवायु-संवेदी फसल विज्ञान में प्रगति: आनुवंशिकी, जीनोमिक्स एवं प्रजनन पर राष्ट्रीय सम्मेलन

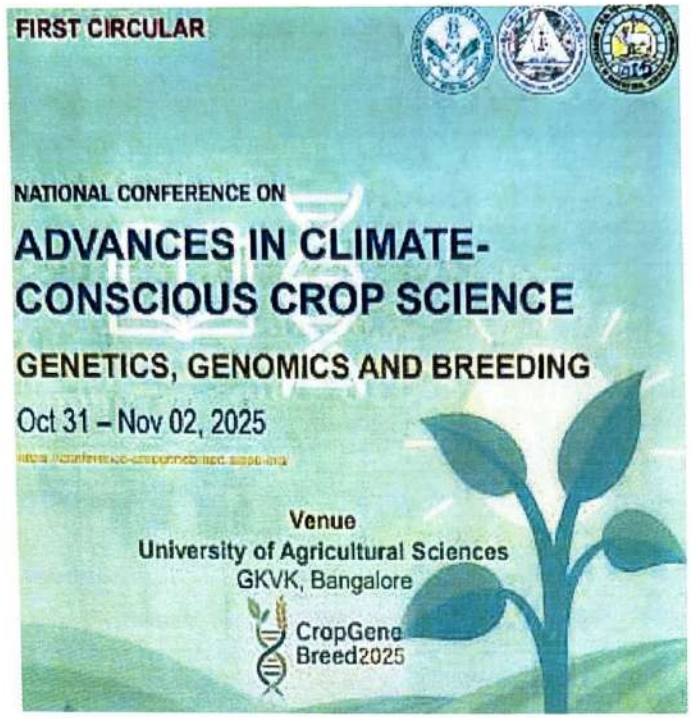

आयोजक संस्थाएँ: भारतीय आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन समाज (आई.एस.जी.पी.बी.), नई दिल्ली; कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय (यूएएस), जीकेवीके, बेंगलुरु; तथा कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय (यू.ए.एस.), धारवाड़।

स्थान: कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, जी.के.वी.के., बेंगलुरु

प्रतिनिधिमंडल के सदस्य (उपकार):

- डॉ. संजय सिंह, महानिदेशक
- डॉ. राजर्षि गौड़, उप महानिदेशक (परिवार में शोक के कारण उपस्थित नहीं हो सके)
- डॉ. रिन्नी सिंह, वैज्ञानिक अधिकारी, पादप प्रजनन/जैव प्रौद्योगिकी

सहभागिता एवं प्रमुख भूमिकाएँ:

डॉ. संजय सिंह, महानिदेशक, उपकार:

महानिदेशक ने मौखिक एवं पोस्टर प्रस्तुति मूल्यांकन सत्रों में एक सम्मानित निर्णायक सदस्य (जूरी सदस्य) के रूप में सहभागिता की। इस सहभागिता ने राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान मानकों को आकार देने में उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार) की रणनीतिक भूमिका को रेखांकित किया तथा देशभर से उभरते हुए अनुसंधान प्रतिभा और नवाचारपूर्ण अवधारणाओं की प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया।

डॉ. रिन्नी सिंह, वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार:

डॉ. रिन्नी सिंह ने विषयगत सत्र "सामाजिक कल्याण परिप्रेक्ष्य में आनुवंशिकी: अनुसंधान से समाजहित तक- नैतिकता, समानता एवं सहभागिता" में "कृषि में उद्यमिता एवं स्टार्ट-अप्स" विषय पर मौखिक प्रस्तुति दी। इस प्रस्तुति ने आर्थिक रूप से व्यवहार्य आनुवंशिकी एवं कृषि प्रौद्योगिकी के एकीकरण में उपकार के सक्रिय दृष्टिकोण को प्रदर्शित किया, जिसे उत्तर प्रदेश में कृषि उद्यमिता को प्रोत्साहन देने की पहल के संदर्भ में दर्शकों द्वारा विशेष चर्चा एवं सराहना प्राप्त हुई।

परस्पर संवाद एवं सहयोग:

तीन दिवसीय सम्मेलन के दौरान उपकार प्रतिनिधिमंडल ने 50 से अधिक प्रख्यात वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों एवं सरकारी गणमान्य व्यक्तियों के साथ व्यापक संवाद स्थापित किया। इनमें आयोजक विश्वविद्यालयों (यू.ए.एस.-जी.के.वी.के. एवं यू.ए.एस.-धारवाड़) के प्रमुख संकाय सदस्य तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के अंतर्गत विभिन्न संस्थानों के अधिकारी एवं वैज्ञानिक शामिल थे।

चर्चाएँ मुख्य रूप से निम्नलिखित विषयों पर केंद्रित रहीं:

1. **जलवायु परिवर्तन शमन:** ऊष्मा एवं सूखा-सहिष्णु फसल किस्मों के विकास पर सहयोगात्मक अनुसंधान के अवसरों की खोज।
2. **प्रौद्योगिकी हस्तांतरण:** विभिन्न सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों में जीनोमिक अनुसंधान के निष्कर्षों को प्रयोगशाला से खेत स्तर तक पहुँचाने हेतु सफल मॉडलों का मानकीकरण।

3. **स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्र:** मूल्य संवर्धन एवं बीज प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में कृषि स्टार्ट-अप्स के लिए वित्तपोषण एवं परामर्श को गति देने की रणनीतियों पर चर्चा।

सम्मेलन में सहभागिता से प्राप्त समग्र लाभ:

लाभ का क्षेत्र	विवरण
ज्ञान अर्जन	जलवायु-संवेदी प्रजनन तकनीकों, उच्च-प्रवाह फेनोटाइपिंग तथा जीनोमिक-सहायता प्राप्त चयन जैसी अत्याधुनिक विधियों का नवीनतम ज्ञान प्राप्त हुआ, जो उत्तर प्रदेश की प्रमुख फसलों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
राष्ट्रीय स्तर पर पहचान	महानिदेशक की निर्णायक सदस्य (जूरी सदस्य) के रूप में सक्रिय सहभागिता ने उपकार की प्रतिष्ठा में उल्लेखनीय वृद्धि की, जिससे परिषद राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान नीति परिदृश्य में एक प्रमुख भूमिका निभाने वाले संस्थान के रूप में स्थापित हुई।
राज्य के प्रयासों की पुष्टि	कृषि उद्यमिता पर प्रस्तुति को मिली सकारात्मक प्रतिक्रिया ने युवाओं की भागीदारी और कृषि की आर्थिक व्यवहार्यता को प्रोत्साहित करने वाली उत्तर प्रदेश की नीतियों की रणनीतिक दिशा को प्रमाणित किया।
संपर्क एवं विस्तार	उन वैज्ञानिकों के साथ मजबूत संपर्क स्थापित किए गए जिनकी विशेषज्ञता उपकार के मूल एजेंडे से सीधे जुड़ी हुई है, जिससे भविष्य में संयुक्त परियोजनाओं एवं संसाधन साझाकरण के नए अवसर खुलेंगे।

भविष्य के सहयोग एवं आगे की दिशा:

- जलवायु-संवेदी प्रजनन से संबंधित प्रमुख निष्कर्षों एवं प्रगतियों का प्रसार- इन जानकारियों को उत्तर प्रदेश के सभी उपकार संबद्ध संस्थानों एवं राज्य कृषि विश्वविद्यालयों तक एक आंतरिक कार्यशाला के माध्यम से पहुँचाया जाएगा, ताकि प्राप्त सर्वोत्तम प्रथाओं को समयबद्ध रूप से राज्य के चल रहे फसल प्रजनन कार्यक्रमों में एकीकृत किया जा सके।
- इस प्रसार से राज्य-स्तरीय प्रजनन कार्यक्रमों को राष्ट्रीय अनुसंधान प्रवृत्तियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सहायता मिलेगी, विशेष रूप से जीनोमिक चयन एवं उच्च-प्रवाह फेनोटाइपिंग जैसी आधुनिक विधियों को धान, गेहूँ एवं गन्ने जैसी प्रमुख फसलों में अपनाने की दिशा में।

- इसका उद्देश्य उपकार एवं राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों की तकनीकी दक्षता को तीव्रता से उन्नत करना है, जिससे राज्य के लिए जलवायु-स्मार्ट फसल किस्मों के विकास की प्रक्रिया को गति दी जा सके।

भ्रमण की झलकियाँ:

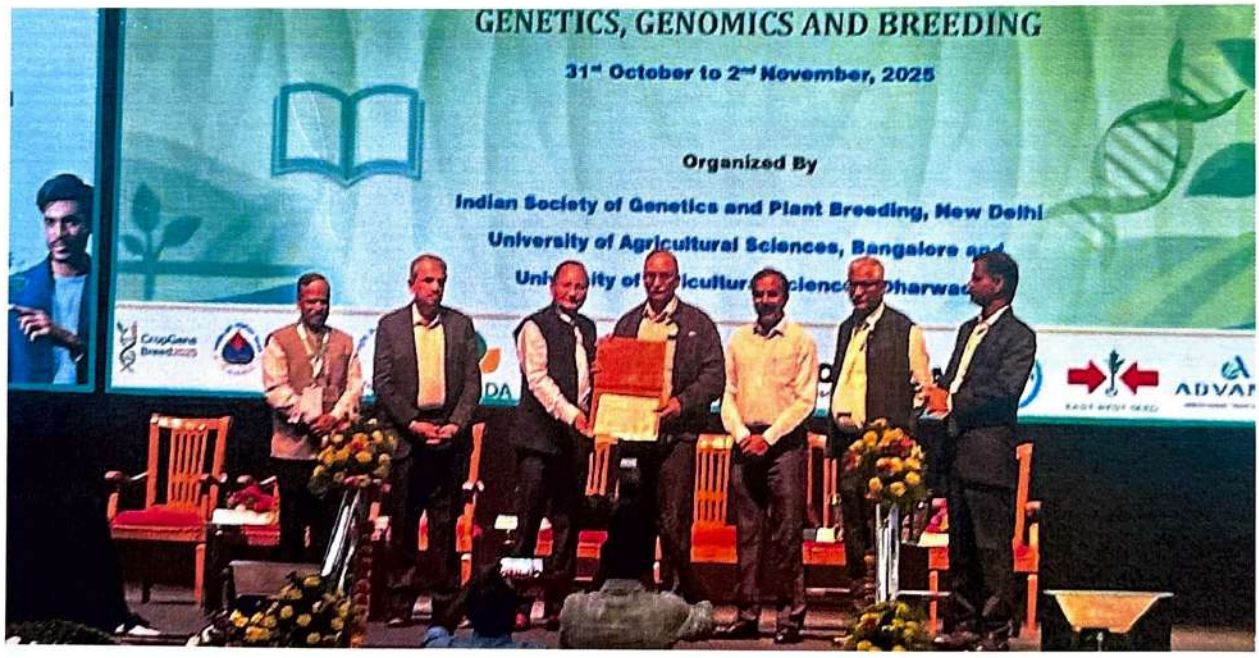

(Sanjay Singh)
Director General
J.P. Council of Agricultural Research
Lucknow

उपकार